ISSN : 2393-9362

साहित्य सरस्वती

Peer Reviewed
Journal

वर्ष-ग्यारह,अंक 41
जनवरी-मार्च 2024

श्री सरस्वती पुस्तकालय एवं वाचनालय,सागर (म.प्र.)

साहित्य सरस्वती

हिन्दी त्रैमासिक

वर्ष - ग्यारह, अंक - 41, जनवरी-मार्च 2024

प्रधान संपादक

डॉ. सुरेश आचार्य

संपादक

डॉ. लक्ष्मी पाण्डेय

उप-संपादक

प्रो. पुरुषोत्तम सोनी

डॉ. ऋतु यादव

व्यवस्था एवं परामर्श

- के. के. सिलाकारी, एडवोकेट, अध्यक्ष
- पूर्व सांसद लक्ष्मीनारायण यादव, न्यासी
- डॉ. मीना पिम्पलापुरे, न्यासी
- पं. शुकदेव प्रसाद तिवारी, सचिव

श्री सरस्वती पुस्तकालय एवं वाचनालय सागर की त्रैमासिक पत्रिका

ISSN - 2393-9362
विश्वविद्यालय अनुदान आयोग (UGC) द्वारा अनुमोदित जर्नल नं. 47704
Peer reviewed journal वर्ष - ग्यारह, अंक - 41, जनवरी-मार्च 2024

विषय विशेषज्ञ समिति

प्रो. सुरेश आचार्य, अवकाश प्राप्त, हिन्दी विभाग,
डॉ. हरीसिंह गौर केन्द्रीय विश्वविद्यालय, सागर

डॉ. लक्ष्मी पाण्डेय, डी. लिट्, अध्यापक, हिन्दी विभाग,
डॉ. हरीसिंह गौर केन्द्रीय विश्वविद्यालय, सागर

प्रो. रूपा गुप्ता, हिन्दी विभाग,
बर्दवान विश्वविद्यालय, कलकत्ता

डॉ. राजीव रंजन गिरी, हिन्दी विभाग,
राजधानी कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली

संपर्क - सचिव, श्री सरस्वती पुस्तकालय एवं वाचनालय ट्रस्ट,
गौर मूर्ति, सागर (म.प्र.)
फोन : 07582-243759, मो. : 9406519191

- **लेखकों के विचारों से संपादक की सहमति आवश्यक नहीं है।**
- **समस्त कानूनी विवादों का न्याय क्षेत्र सागर (म.प्र.) होगा।**
- **सभी पद पूर्णतः निःशुल्क और अवैतनिक हैं।**
- **रचनाओं के लिए किसी भी प्रकार के भुगतान की व्यवस्था नहीं है।**

आवरण
असरार अहमद सागर

अक्षर संयोजन एवं मुद्रण
अनुज्ञा बुक्स
1/10206, वेस्ट गोरख पार्क, गली नं. 1E
शाहदरा, दिल्ली-110032

सम्पादकीय

विश्व में विश्वास का संकट

पिछले लगभग दो वर्षों से विश्व में विश्वास का जैसा संकट बना हुआ है, लाख विवादों के बावजूद पहले कभी नहीं रहा। रूस और यूक्रेन के बीच शुरू झड़पें युद्ध में बदल गईं। यह निरंतर जारी है। इजराइल और हमास के विवाद के सिरे अमेरिका और ईरान तक पहुँच रहे हैं। मालदीव जैसे छोटे द्वीप भी युद्ध की राजनीति के लपेटे में आ रहे हैं। मिडिल ईस्ट और योरप में तनातनियाँ खूब दिखाई दे रही हैं। चीन-ताइवान विवाद, साउथ और नार्थ कोरिया विवाद कब युद्ध में बदल जाएँ कहा नहीं जा सकता। इन सबके पीछे बल का, भूमि का, विज्ञान का और धन का लौकिक अहंकार या मोह है। 'ईट ड्रिंक एंड बी मैरी' की पश्चिमी धारणा है।

भारतीयता लौकिक से हटकर एक अलौकिक वैचारिक संदेश संसार को देती रही है। सर्व एकात्मकम जगत अर्थात् सारा संसार एक ही है और 'वसुधैव कुटुंबकम' यानी पूरा विश्व ही एक परिवार है, के आप्त वाक्य भारतीय धर्म-दर्शन और आध्यात्म ने प्रस्तुत किए हैं। संसार और शरीर की नश्वरता तथा संस्कृति और आत्मा की अमरता के सिद्धान्त विश्व को दिए। संसार में भारतीयता की प्रतिष्ठा के पीछे मूल कारण भी यही है। गीता में अर्जुन ने कृष्ण से कहा– हे कृष्ण न तो मुझे युद्ध में विजय चाहिए, न राज्य न पुनः जन्म। मेरी इच्छा है कि मैं दुख से संतप्त प्राणि मात्र के कष्ट नाश कर सकूँ।

न विजयं कांक्षे कृष्ण, न राज्यं न पुनर्भवम्।
कामये दुख तप्तानाम् प्राणिनामार्त नाशनम्।।

क्या चिंतन है, क्या मानवीयता है और क्या त्याग है। मगर कई दर्शनों में खाने-पीने और मौज उड़ाने की प्राथमिकता दिखती है। यह उल्लेखनीय है कि भारत में भी यह प्रवृति लिए चिंतन प्राप्त होते हैं। मगर हमारा मूल स्वर शांति और सुख सबके लिए वाला स्वर है। हजारों लाखों साल की इस बूढ़ी दुनिया में आज तक इस समझदारी का अभाव क्यों है कि जियो और जीने दो की सामान्य बात समझ में नहीं आती।

न मनुष्य पारस्परिक विश्वास करते हैं न शहर, न मुहल्ले, धर्म, भाषा, प्रांतवाद के जितने झगड़े दुनिया में मिलेंगे उनकी गिनती मुश्किल है। अब अणुबमों की धमकी देने वाले देश इस भाषा में बोलते हैं जैसे एटामिक विस्फोट कोई आतिशबाजी हो। जिसे चाहे जब चलाया और चलाकर अपनी प्रतिष्ठा, धाक, रौब और रुतबा बढ़ाया जा सकता है। दीपावली की आतिशबाजी के नाम से भारत में मध्यप्रदेश के हरदा शहर की बारूदी त्रासदी स्मरण हो आई। यहाँ हरदा में दीपावली और शादियों के लिए आतिशबाजी बनानेवाली एक पटाखा फैक्ट्री में ऐसा भीषण विस्फोट हुआ कि दस-बारह घंटों तक दमकलें जिनकी संख्या सौ से अधिक थी निरंतर पानी डालती रहीं मगर सुतली बम फूटते रहे। फैक्ट्री परिसर से सटे पी एम आवास योजना के तहत बने हुए मकान ध्वस्त हो गए। लगभग बारह लोगों के प्राण गए और सौ से अधिक लोग घायल हुए। यह मध्यप्रदेश की भीषणतम दुर्घटनाओं में से एक है। जाहिर है सरकार सफाइयाँ देगी और विधानसभा में विपक्ष तेज-तर्रार विरोध करेगा। इस तरह की पचासों कार्यवाहियाँ पूर्व में घटित घटनाओं